Item Code: 642 തിയ്യതി..... Participant Code: 026

कहींसे आया एक बेघर चिड़िया...!

"अगला बीमार आओ" डॉक्टर अरविंद अपने काम में मशगूल है। अरविंद की इलाज के खुसूसियत है उस शहर की सरकारी अस्पताल का बीड़ का कारण। अरविंद के इलाज से कितनी लोग है अपना जीवन वापस मिली है। साँवला, पतला शरीर और हमेशा चेहरा का हँसी सब लोगों को दिल उम्मीद पैदा करता है। शाम का समय चुका है, फिर भी अरविंद काम में है। "डॉक्टर, मैं तुम्हें धन्यवाद करना आया हूँ, अब मेरा सीने का दर्द पूरी तरह सुख हो गया है, आपको बहुत शुक्रिया" बीमारी नमी आँखों से कहा। "आपको दर्द न सुख होने तो मैं एक डॉक्टर का वेष पहनकर चलने में क्या अर्थ है!" अरविंद मुस्कुराकर कहा। "आपको कौन डॉक्टर बनाया? आपका माँ-बाप कहाँ है? मैं ~~उन्होंसे~~ उन्होंको एक अच्छा इनाम देना चाहता हूँ" बीमारी का शब्दों डॉक्टर को चौंक दिया। "इसका अवश्य नहीं है, मैं उससे बनाऊँगे" इतना कहकर अरविंद ने उस बातचीत बंद किया। उस बीमार ने रूम से

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

जाने तो पीछे से नर्स ने कहा "यह आज का आखिरी बीमार था। सब चुका है" "हाँ, तुम जाओ" इतना कहकर डॉक्टर अपने रूम के आइने के पास गया। अपना खुद चेहरा देखकर अरविंद को गुस्सा आया। वह ज़ोर से चिल्लाया "मैं कौन हूँ? मैं कैसे इस धरती में आया हूँ? मेरे माँ-बाप कौन हैं?"। जैसे प्रश्नों को उनके पास जवाब न था। वह कुछ आराम मिलने के लिए घर जाने का तय किया। शहर की कोने के फ्लॉट में वह एक रूम किराए पर लिया है। वह ज्यादा सालों से यहाँ ज़िंदगी गुज़रता है।

वह रूम में आकर नहा किया और ईश्वर से प्रार्थना किया। पेट में आग ~~लगती है तो~~ जलती है तो भी उसे अब खाने को नहीं सकता है। उनके चारों तरफ एक ही बात हैं, एक ही सोच है "मैं कौन हूँ?"। मन को थोड़ा सुख देने के लिए वह बिस्तर पर लेटकर सोने के लिए कोशिश करता है लेकिन नहीं सकता है। बिस्तर पर लेटकर करवट लेता है, नींद नहीं आता है। उसे लगा कि एक प्रश्न "मैं कौन हूँ" यह प्रश्न उसको धमकाता है और उसे मारता है। वह बिस्तर पर ~~लेटकर~~ छत की तरफ देखकर लेटता है।

वह अतीत के तरफ उड़ता है। "दिमाग में अपना कहने के लिए सिर्फ एक ~~है~~ महिला है, शालिनी। लेकिन वह मेरा माता नहीं है। मैंने दो साल से उसके साथ है। वह कहा था कि वह एक रात में बाज़ार की तरफ चलते वक्त सड़क के किनारे से एक बच्चा की रोना सुनता है, बड़ा दयालू है वह उस आवाज़ को तलाशकर वह चलता और आखिर एक टोकरी से मुझे मिला है। वह हैरान हो गई कि "कौन इतना छोटा बच्चे को छोड़ दिया!। वह मुझे हाथ में उठाकर उसकी घर गया। शादी के बाद पाँच साल हो तो भी शालिनी और पति को बच्चें नहीं थी। इसलिए शालिनी मुझे ~~एक~~ उसकी खुद बच्चे की तरह पालने को तैयार था। लेकिन उसका पति उस बात पर पसंद नहीं था। वह शालिनी से बार-बार मुझे छोड़ने को कहे तो भी शालिनी के मज़बूर से वह मुझे पालने लगा। फिर शालिनी मेरा माता हुआ। मैं उसे माँ ~~कहने~~ पुकारने लगा। वह मेरा इस पुकार बहुत पसंद था। ऐसे मेरी ज़िंदगी शालिनी की घर में खूबी से चला गया। वह मुझे खाना दिया, कपड़ा दिया, पढ़ाई दिया, जैसे सब सहूलतें दिया।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തീയതി..................

ऐसे एक दिन शालिनी का पति की गंबीर आवाज़ सुनकर मैं नींद से उठा। मैं देखा तो शालिनी का पति उसको डाँटा कर रहा है। शालिनी के आँख से आँसू बहता है। मैं उस समय दसवीं कक्षा में पढ़ता था। उनकी बातों से मैंने समझ लिया कि शालिनी का सुनहरी माला नष्ट हो गया है। शालिनी की पति कहता था कि "आपको प्यारा बेटा से पूछो, मुझे यकीन है कि वह अपनी अवश्यों के लिए माला लिया है" "वह जैसे नहीं है, वह सच्चा बेटा है" यह सुनते मेरा दिल टूट गया। मुझे क्या करना, क्या कहना नहीं जानता था। मैं वहाँ से जाने का ~~निश्च~~ निश्चय किया। शालिनी के लिए मैं कुछ लिखकर वहाँ रखा "माँ, मुझे आपके माला का अवश्य नहीं है। अब मैं किसी को एक प्रश्न नहीं है, मैं यहाँ से जाता हूँ, आप दिए सारा उपकार मेरा दिल में है, इसको बदल देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। आपको बहुत धन्याद।
: आपका प्यारा बेटा अरविंद" इतना लिखकर वहाँ शालिनी के कमरे में रखकर मैं उस बंदिपुर गाँव को ~~[illegible]~~ से ~~[illegible]~~ वापस चलने लगा।

फिर मैं चलते चलते किसी एक शहर में आ पहूँचा।

वहाँ का माहौल गाँव से पूरा अलग था। मेरे लिए यह सब नया था। वहाँ से मैं हिम्मत पढ़ा, जीने का राह पढ़ा जैसे ज़िंदगी की पूरी में वहाँ से पढ़ा। मुझे देखकर वहाँ के एक चाय बेचने वाले मुझे उसकी दूकान में काम दिया। मुझे वह ईश्वर और बाप जैसे लगा थी। थोड़ा - थोड़ा से मिलते पैसे से मैं जीना लगा। दसवीं कक्षा का मेरा सपना था एक डॉक्टर बनना। मैंने इस सपना के पीछे दौड़ने लगा। चाय दुकान से मुफ्त में मिलते समय में किताबें पढ़ी और सपना देखने लगी। जैसे चाय दुकानदार की मदद से मैं आज यहाँ पहूँचा। क्या वह है मेरा पिता? वह है मुझे डॉक्टर बना लिया? तो वह अब कहाँ था। मैं कुछ साल पहले जाते वक्त वहाँ, उस दूकान में उसको धूल भी नहीं था। जैसे मेरा ज़िंदगी में मैं बहुत वीरान हो गई। मैं कैसे मेरा माँ बाप को खोंचों? वह कहाँ है... सोचें जंगल चढ़ने लगा था।"

जब अरविंद अतीत से वापस आया तो सूरज की किरणें अरविंद को बुलाना है। वह नई उम्मीद से बिस्तर पर उठा। कल की सपनों उसके मन में

बंदीपुर जाकर शालिनी को देखने का आशा उठाया। वह नय किया है कि आज ~~चुट्ठी~~ अस्पताल से चुट्ठी लेकर बंदीपुर जाना है। वह जल्दी से तैयार हुआ और बस स्टान्ड की तरफ दौड़ा। उसको उम्मीद था कि आज उसकी प्रश्न "मैं कौन हूँ" को जवाब मिलेगा और उस उम्मीद अरबिंद को बंदीपुर की तरफ दौड़ाना है। अरबिंद बस में जाकर बंदीपुर गाॅव पहूँचा। बचपन की यादें उसको सताने लगा।

वह अपने बचपन की घर की तरफ़ चलता है। चलते वक्त वह एक चाय पीने के लिए एक दुकान में जाता है। "अरे, एक चाय" अरबिंद ने आदेश किया। चायवाला एक चाय देकर पूछता है कि "क्या आप कहाँ से है? यहाँ कभी न देख है।" "मैं कुछ दूर एक शहर से है, मेरा एक रिश्तेदार को देखने के लिए आया है। अरबिंद मुस्कुराकर कहा। वहाँ से निकलकर वह अपनी बचपन की यादों भरा रहते उस छोटी घर की तरफ चलता है। वहाँ सब खामूश थी। उसे लगा कि ~~घर~~ इस घर में कोई नहीं है। वह ज़ोर पुकारा "अरे, इस घर में कौन नहीं है?"। एक बूढ़ा आदमी अंदर से दरवाज़ा खोलकर आता है। अरबिंद

को समझाया है कि यह शालिनी का पति है। अरविंद पूछा "क्या मेरा माँ यहाँ है" "मुझे अब से कोई बच्चा नहीं है, फिर आपका माँ कैसे यहाँ होगी"। उस बूढ़ा मज़ा उठाकर कहा। "शालिनी माँ, कहाँ है? मैं अरविंद हूँ।" ~~अरि~~ अरविंद कहा। "~~अर्~~ शालिनी मिट्ठी में होकर कितना साल गुज़र गई। अब आया है शालिनी को तलाश में, यहाँ ~~कोई~~ शालिनी और कोई नहीं है, तुम जल्दी यहाँ से जाओ... जाओ..." उस बूढ़ा ज़ोर से मुस्कुराकर कहना है। यह ~~देखकर~~ सुनकर अरविंद चौंक गया, उसका बदन निश्चल हो गया। उसका जीब बड़बड़ाना है "शालिनी माँ... शालिनी माँ....। आखिर किसी को न मिलने वह उस बंदिपूर से लौटने का मज़बूर होना। अपने सोलह साल में उदास भरी वह इस गाँव से वापस जाना है। अब वह फिर पच्चीस साल की आयू में भी दुखभरी इस गाँव से लौटने को मज़बूर होना है। ~~काला~~ ~~बाद~~ काला बादल अरविंद को देखकर ज़ोर से गर्जने लगा। अरविंद को लगा कि बादल भी उसको देखकर गर्जते है कि तुम कौन हूँ। अरविंद की आंखें भर गई। उसकी आँखों से आँसू फव्वारा की

नरह बहने लगा। इतने में मूसलधार बारीश भी आया। उसे लगा कि काला आसमान भी उसके लिए आँसू बहता है। ठंडा हवा अरविंद को शांत करने को कोशिश करता है। ~~हर एक~~ है। उसे लगा कि हर एक हवा कहता है कि "अरविंद, तुम ~~कौन~~ हो ईश्वर की एक सच्चा प्रचा है। ज़रूर है यह समय भी बीत जाएँगे। अरविंद दिल फिर भी शांत नहीं होना है। उसका बदन की हर एक बाल उससे पूछता है कि "तुम कौन हैं?"

अरविंद जल्दी से रूम में गया और इधर-उधर चलने लगा। उसके मन गहरे उदास में था। वह एक कागज़ ~~उसका~~ और कलम उठाया और लिखने लगा "मैं हार हो ~~गया~~। गया हूँ। मुझे इलाज से बीमारी सुख करने को सका है लेकिन एक छोटा प्रश्न का उत्तर देने को नहीं सका है। मुझे नहीं जानना हूँ कि "**मैं कौन हूँ?**"। इतना लिखकर वह इस कागज़ वहाँ रखा और वह ज़हर पीकर वहाँ गिरा। उसके मन एक ज़िंदे लाशों की नरह बड़बड़ाता है, "मैं कहाँ से आया हूँ? मैं कौन हूँ?"। अब कहीं से आया एक बेघर ज़िंदिया की नरह वह ईश्वर के पास उड़ना रहना है.....!